Ans. (b) – पटवों की हवेली जैसलमेर में स्थित है। यह पाँच हवेलियों का समूह है अर्थात् यह पाँच हवेलियों से मिलकर बनी है। वर्ष 1805 में पहली हवेली का निर्माण जैसलमेर के प्रसिद्ध आभूषण व्यवसायी गुमान चंद पटवा द्वारा किया गया।

432. निम्नलिखित जोड़ों में कौन-सा सही मेल नहीं है-

(a) राणा प्रताप-सिसोदिया
(b) राजा मानसिंह-हाड़ा
(c) जसवन्त सिंह-राठौर
(d) महाराणा हम्मीर-गुहिल

Lab Assistant Exam Date- 13.11.2016

Ans. (b) – सही सुमेलन निम्नलिखित हैं-

शासक		राजवंश
राणा प्रताप	-	सिसोदिया
राजा मानसिंह	-	कछवाहा
जसवन्त सिंह	-	राठौर
महाराणा हम्मीर	-	गुहिल

433. यहाँ कुछ युद्धों की सूची दी गई है जो मध्यकालीन राजस्थान में लड़े गये थे-

(i) तराइन-प्रथम युद्ध
(ii) खानवा
(iii) समेल
(iv) भटवाड़ा

(a) i, iii, ii, iv (b) i, ii, iii, iv
(c) iv, iii, ii, i (d) iii, ii, i, iv

Lab Assistant Exam Date- 13.11.2016

Ans. (b) –उपर्युक्त युद्धों का कालानुक्रम निम्नलिखित है-

(i)	तराइन-प्रथम युद्ध	-	1191 ई.
(ii)	खानवा का युद्ध	-	1527 ई.
(iii)	समेल का युद्ध	-	1544 ई.
(iv)	भटवाड़ा का युद्ध	-	1761 ई.

434. 1734 ई. में आहूत हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता की-

(a) सवाई जयसिंह (b) जोरावर सिंह
(c) दुर्जन साल (d) जगत सिंह

RPSC SI 14-09-2021

Ans. (d) : 1734 ई. में आहूत हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह ने की। सम्मेलन का उद्देश्य सामूहिक शक्ति द्वारा मराठों को राजस्थान पर आक्रमण करने से रोकना था। सम्मेलन के आयोजन में सवाई जयसिंह की भूमिका सबसे अधिक थी।

435. गोविन्द गुरु ने भीलों को संगठित करने के लिए कौन सा संगठन स्थापित किया था?

(a) भील हितकारणी सभा
(b) भील सामुदायिक सभा
(c) सम्प सभा
(d) भगत पंथ

Lab Assistant (Home Science)-30.06.2022

Ans. (c) : गोविन्द गुरू ने भीलों को संगठित करने तथा उनमें सामाजिक व राजनीतिक जागृति पैदा करने के लिए 'सम्प सभा' की स्थापना 1883 ई. में की थी।

436. राजस्थान के राजवंशों के राजस्व प्रणाली के अंतर्गत किस प्रकार की भूमि को राजा की निजी सम्पत्ति माना जाता है?

(a) भौम (b) जागीर
(c) हवाला (d) खालसा

Kanisht Abhiyanta (Civil)-18.05.2022

Ans. (d) : राजवंशों के राजस्व प्रणाली के अंतर्गत खालसा भूमि को राजा की निजी सम्पत्ति माना जाता था। यह भूमि सीधे राज्य के अधीन होती थी। इस भूमि पर लगान निर्धारित करने,वसूल करने तथा लगान में छूट देने का का कार्य राज्य के अधिकारी करते थे। खालसा भूमि के अतिरिक्त जागीर भूमि पर जागीरदार का नियंत्रण होता था।

437. निम्न में से किस इतिहासकार ने राजपूतों को शक अथवा सिथियन जाति के वंशज माना है?

(a) चन्दबरदाई (b) सी.एम.वैद्य
(c) जेम्स टॉड (d) गोपीनाथ शर्मा

उद्योग प्रसार अधिकारी -2018 (22 जुलाई, 2018)

Ans. (c) इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने राजपूतों को शक एवं सिथियन जाति का माना है। अपने इस मत के समर्थन में उन्होने विभिन्न प्रचलित रीति-रिवाजों जो शकों के रीति-रिवाजों से समानता रखते है प्रस्तुत किया है।

438. निम्न में से कौन से वंश की उत्पत्ति अग्निकुंड से नहीं हुई?

(a) परमार (b) सिसोदिया
(c) चौहान (d) चालुक्य

उद्योग प्रसार अधिकारी -2018 (22 जुलाई, 2018)

Ans. (b) – सिसोदिया वंश की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से नहीं हुई है। राजपूतों का अग्निकुंड सिद्धान्त चन्दबरदाई के पृथ्वी राजरासो से आया है। इस सिद्धान्त के अनुसार, राजपूत ऋषि वशिष्ठ द्वारा किये गये यज्ञ का परिणाम थे। इस अग्निकुण्ड से चार राजपूत वंश परमार, चौहान,चालुक्य एवं प्रतिहार की उत्पत्ति हुई थी।

439. 1890 के दौर में बिजौलिया के जागीरदार कौन थे?

(a) चौहान (b) परमार
(c) राणावत (d) शक्तावत

उद्योग प्रसार अधिकारी -2018 (22 जुलाई, 2018)

Ans. (b) 1890 के दौर में बिजौलिया के जागीरदार परमार थे। वर्तमान में बिजौलिया राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित है। बिजौलिया में किसान आन्दोलन मेवाड़ राज्य के किसानों द्वारा वर्ष 1897 में शुरू किया गया था जो वर्ष 1941 में समाप्त हुआ। इस आन्दोलन का नेतृत्व विभिन्न समयों में विभिन्न लोगों द्वारा किया गया, जिनमें-विकास विश्नोई,फतेह करण चारण,सीताराम दास, विजय सिंह पथिक आदि उल्लेखनीय है।

440. गिरि सुमेल का युद्ध _____ में लड़ा था।

(a) 1539 (b) 1542
(c) 1544 (d) 1546

उद्योग प्रसार अधिकारी -2018 (22 जुलाई, 2018)

Ans. (c) गिरि सुमेल का युद्ध राजा मालदेव एंव शेरशाह सूरी के मध्य वर्ष 1544 में हुआ था। इस युद्ध में शेरशाह सूरी को अत्यन्त कठिनाइयों का समाना करना पड़ा। इस युद्ध का नेतृत्व राजा मालदेव के सेनानायक जैताजी एवं कूपाजी ने किया था। इसी युद्ध में शेरशाह ने कहा था ''मै मुठ्ठी भर बाजरे के लिए दिल्ली की सल्तनत खो देता, ऐसे योद्धा मेरे साथ होते तो में विश्व विजय कर लेता।''